शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

सम्पादकीय

www.shodh.net

सम्पादकीय

शोध पत्रों के लेखन में प्राय: यह चर्चा होती है कि किस संदर्भ प्रणाली को अपनाया जाये। कुछ विद्वान APA Style को कुछ MLA को तो कुछ शिकागो मैनुअल का अनुसरण करते हैं। ये प्रणालियाँ प्राय: शोध कार्यों की समीक्षा प्रणाली एवं सम्पन्न शोधों के रख रखाव से जुड़ी हुयी हैं। तो कुछ संस्थाओं ने इसे अपनी पहचान प्रणाली के रूप में स्वीकृत कर रखा है। शोध कार्य श्रृंखला क्रिया की तरह है। समान शोध अपने विषय क्षेत्र के अनुसार परस्पर सम्बद्ध होते हैं। शोधार्थी सदैव, स्थापित सत्य से अपना समाधान ढूढ़ने का प्रयत्न करता है। उसे अपर्याप्त पाने पर वह स्थापित अथवा पूर्वान्वेषित सत्य को आगे बढ़ाता है अथवा समसामयिक परिवेश में उस सत्य का पुन: परीक्षण कर उसे खण्डित करता है। इस प्रकार किसी भी शोध प्रक्रिया में यह अत्यन्त आवश्यक है कि अपनी शोध समस्या के संदर्भ में सम्पन्न शोधों के तथ्यों का परीक्षण किया जाए। दूसरे शब्दों में शोध की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण अत्यन्त आवश्यक है। शोध कार्य की मौलिकता इस बात में निहित है कि शोध प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण अथवा समीक्षा (Review of literature) कितनी गहनता से की गई है।

किसी भी विषय विशेषज्ञ द्वारा समीक्षित (Peer Review Journal) पत्रिका के लिए आवश्यक है कि शोध कार्यों के मौलिकता की गहन जाँच की जाए। एक तरफ तो उस शोध प्रतिवेदन (Report) अथवा शोध आलेख का शोध प्रक्रिया में अपनायी गयी मानक एवं वस्तुनिष्ठ प्रणाली के अनुसार परीक्षण किया जाये तथा दूसरी ओर विषय के संबंध में उसकी गंभीरता की समीक्षा की जाए। मान्य समीक्षक शोध आलेखों का शोध संपादन नहीं करते अपितु उसके उपरोक्त पुष्टियों से परीक्षण एवं मूल्यांकन करते हुए सही सुझाव प्रस्तुत करते हैं एवं शोध आलेख के प्रकाशन के संबंध में अपनी सम्मति देते हैं। किसी भी प्रकाशक/मूल्यांकनकर्ता संस्था की संदर्भ प्रणाली उपरोक्त प्रक्रिया में शोध कार्यों के परीक्षण मूल्यांकन की आवश्यकता से जुड़ा है। प्रश्न है कि इस प्रक्रिया का प्रयोग कितनी संस्थाएँ या संपादक/प्रकाशक अपने प्रकाशन में करते हैं।

इस संदर्भ में अपनी नीति न होने पर वे मान्य प्रतिष्ठित संस्थाओं या पत्रिकाओं की संदर्भ प्रणाली को फैशन के तौर पर अपनाते प्रतीत होते हैं। आवश्यकता है कि अपने देश में शोध कार्यों को एक डेटा बेस निर्मित हो जिसमें सभी शोध कार्यों की सूची हो एवं सभी प्रकाशन कार्य को अनिवार्य रूप से प्रकाशित किया जाए। जिस प्रकार एक शोधार्थी अपने अध्ययन के दौरान शोध कार्य में खर्च करता है और विश्वविद्यालय अथवा संस्थाएँ भी उस पर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से व्यय करती हैं उसी तरह से शोध प्रबन्धों के प्रकाशन को अनिवार्य किया जाए। संभव हो तो इस प्रकाशन को ई-प्रकाशन से जोड़ा जाए। वैसे भी ई-प्रकाशन में व्यय कम है और इन्टरनेट से जुड़कर सर्व सुलभ हो सकता है। आवश्यकता पड़ने पर उन संदर्भों को आवश्यकतानुरूप सुलभ कराया जाए। इससे न केवल शोध कार्यों की पुनरावृत्ति या चोरी रुकेगी वरन् किसी विषय पर दुबारा कार्य न करने से श्रम का दुरुपयोग रुकेगा एवं प्रासंगिक एवं अद्यतन विषयों पर शोध कार्य की प्रेरणा मिलेगी। अभी अंग्रेजी में इस प्रकार के शोध कार्यों का डेटा बेस रखना और उनसे संदर्भ सामग्री आदि को ढूढ़ना अपेक्षाकृत भारतीय भाषाओं में सहज है हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में यूनीकोड में टाइप करना संभव तो है किन्तु व्यापक तौर पर डेटाबेस में यह कार्य दुरूह है क्योंकि वेब पर हिन्दी में कार्य के लिए यूनीकोड का प्रयोग होता है और प्रकाशन व्यवसाय में मुद्रण हेतु हिन्दी के चाँदनी, कृतिदेव, चाणक्य अलंकार आदि फॉन्ट प्रयोग होते हैं। इन दोनों के बीच परिवर्तन व्यवहारोपयोगी नहीं है, क्योंकि उनमें कुछे अक्षर और मात्राएँ पूर्णतया: बदल जाते हैं या लुप्त हो जाते है। इन सभी फॉन्टो के बीच परस्पर परिवर्तनीयता उसी प्रकार सुगम हो जैसे अंग्रेजी के फांटो का तब शायद डेटा बेस का रख रखाव और उनसे अपेक्षित सूचनाओं की खोज (Search) सुगम हो सकेंगे, ऐसा हो पाना हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के इलेक्ट्रानिक प्रकाशन की बड़ी चुनौती है। इससे हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में सम्पन्न शोध कार्यों की जानकारी संभव हो सकेगी और उनसे संदर्भ साहित्य और विषय विशेष के संबंध में साहित्य का सर्वेक्षण सुगम हो सकेगा।

इससे शोध कार्य की पुनरावृत्ति रूक सकेगी और शोध की गुणवत्ता बढ़ेगी। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए यह आवश्यक है कि यदि संपूर्ण शोध प्रबंध का प्रकाशन न भी हो सके तो शोध प्रबंधों का सार और शोध परियोजना का प्रतिवेदन (Report)प्रकाशित किया जाए। इसके अतिरिक्त शोध संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों में सम्पन्न शोध विषय को आवधिक रूप से अवश्यमेव प्रकाशित किया जाए। इससे शोध छात्र सटीक साहित्य की सूचना के आधार पर उन

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

सम्पादकीय

www.shodh.net

विश्वविद्यालय या शोध संस्थानों के पुस्तकालयों से संदर्भ ग्रहण कर सकेंगे।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए शोध संचयन ने हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम से सम्पन्न शोधों की सूचना को विविध स्रोतों से एकत्रित कर सभी को उपलब्ध करा दिया है। अब अपने किसी विषय पर शोध कार्य करते समय, संबंधित साहित्य सर्वेक्षण हेतु सम्पन्न शोधों की सूचना www.shodh.net पर जाकर ले सकता है। विगत तीन वर्षों से अथक परिश्रम के उपरान्त यह कार्य सम्पन्न हो पाया है। जिस भी शोधकर्त्ता की शोध की जानकारी वहाँ उपलब्ध नहीं है, वे वहाँ पर अपनी पूरी सूचना अंकित कर सकते हैं जिसकी पुष्टि (Varification) के बाद उस सूचना को डेटा बेस (संग्रहण) में संकलित कर लिया जाता है।

निष्कर्षत: शोध प्रकाशन अनिवार्य हो, उनकी सूची और उसका डेट बेस निर्मित हो तथा भारतीय भाषाओं में सम्पन्न शोध के डेटा बेस के अनुसार संदर्भ प्रणाली विकसित किया जाए, न कि केवल नकल की परिपाटी विकसित की जाए।

- डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह